CENTRAL TEACHING OF GITA

गीता का मुख्य उपदेश

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan
(For Part- 2 Hons./Subs. Students

गीता को सबसे अधिक महत्वपूर्ण श्रुतियों में से एक माना गया है, यही कारण है कि अधिकांश महान दार्शनिकों ने उनका भाष्य किया है और अपने मतों की पुष्टि करने का प्रयास किया है।यही कारण है कि गीता का मुख्य उद्देश्य क्या है ?इसको लेकर भारी मतांतर है।इससे कुछ लोगों ने यह अर्थ लगाया कि गीता में कोई एक मुख्य उपदेश है ही नहीं।ऐसा सोचना गलत होगा क्योंकि यदि ऐसा होता तो उपनिषद के रहते गीता की क्या जरूरत थी ? गीता के उपदेश का प्रयोजन ही था युद्ध के मैदान में मोह बन्धन में पड़े हुए अर्जुन को निश्चित और स्पष्ट मार्ग बतलाना और अर्जुन ने उपदेश सुनने के पश्चात यह माना भी की सारे संदेह दूर हो गए।इसके साथ ही साथ यह भी सत्य है कि गीता में ज्ञान, भक्ति और कर्म में से किसी को मुख्य नहीं ठहराया गया है।इसमें निष्काम- कर्म-योग के नाम से एक ऐसा मार्ग उपस्थित किया गया जिसमें ज्ञान भक्ति और कर्म, बुद्धि भावना और संकल्प सभी की चरम परिणति है। यह निष्काम-कर्म-योग ही गीता का मुख्य उपदेश है। मुख्य उपदेश को लेकर बिभिन्न विचारकों ने विभिन्न मत दिये हैं।

शंकर का मानना है कि गीता का मुख्य उपदेश ज्ञान है, वे कर्म और भक्ति को ज्ञान से नीचे मानते हैं।उनके अनुसार केवल तत्व ज्ञान से ही मोक्ष प्राप्त हो सकता है।रामानुज ज्ञान और कर्म के अपेक्षा भक्ति को ऊँचा मानते हैं।वे भक्ति में ज्ञान और कर्म को जरूरी नहीं मानते।

'गीता रहस्य' में लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने गीता का मुख्य उपदेश 'कर्मयोग' को माना है।उनके अनुसार गीता में जीवन का अर्थ सुलझाने के लिये नहीं बल्कि अपना कर्तव्य खोजने के लिये तथा कर्म की सहायता से जीवन की पहेली को सुलझाने के लिये कहा गया है।यहाँ वे ज्ञान और भक्ति दोनों को गौण कर देते हैं।तिलक के इस विचार को और अधिक बल प्रदान करते हुए कहा गया है कि जिस प्रसंग में गीता का उपदेश दिया गया वह युद्ध का प्रसंग था।इसे दार्शनिक विवेचन का ग्रंथ समझना ठीक नहीं है।गीता का मुख्य प्रयोजन अर्जुन को युद्ध करने अर्थात कर्म करने के लिये तैयार करना था।मोहवश कर्म से विमुख हो जाने पर ही गीता की जरुरत पड़ी।तिलक यह भी बतलाते हैं कि गीता के उपदेश के बाद अर्जुन न तो सन्यासी होकर जंगल की ओर चला गया और न भक्त बन कर कीर्तन करने

लगा बल्कि कमर कसकर युद्ध के लिये तैयार हो गया।इस तरह तिलक के अनुसार गीता का प्रयोजन ज्ञान अथवा भक्ति न होकर कर्म है।

तिलक के साथ ही साथ अन्य लोगों के विचार जिनका मानना है कि गीता का मुख्य उपदेश कर्म ही है वे समन्यवादी विचार नहीं रखते, उनके विचार एकाँगी हैं।गीता में कर्म पर उपदेश दिया गया है पर वह निष्काम कर्म है।निष्काम का अर्थ होता है कामना रहित अथवा तटस्थ भाव से ईश्वर की ईच्छा अनुसार काम करना।यह ईश्वर से तादातम्य की स्थिति में ही हो सकती है।भक्ति और पूर्ण आत्म-समर्पण के बिना तादातम्य असम्भव है।पूरी तन्मयता के लिये बुद्धि का भी योगदान जरूरी है,अतः ज्ञान की उपेक्षा नहीं की जा सकती।गीता में वर्णित स्थिति-प्रज्ञ की अवस्था तक पहुंचने के लिये ज्ञान, भक्ति और कर्म, विचार, भावना और संकल्प सभी का समन्वय आवश्यक है।